IJFANS INTERNATIONAL JOURNAL OF FOOD AND NUTRITIONAL SCIENCES
ISSN PRINT 2319 1775 Online 2320 7876
Research Paper © 2012 IJFANS. All Rights Reserved Journal UGC CARE Listed (Group-I) Volume 11, Iss 01 Jan 2022

शिक्षा में परिवर्तन की आवश्यकता

पटेल परखाभाई लाधाभाई

रिसर्च स्कॉलर, हेमचंद्राचार्य उत्तर गुजरात यूनिवर्सिटी, पाटन, गजरात

ई-मेल: patel.parkhabhai0003@gmail.com

जीवन के हर क्षेत्र में शिक्षा का बहुत महत्व है। इसलिए शिक्षा को व्यावहारिक और प्रभावी बनाना जरूरी है। 'राष्ट्र के भविष्य का निर्माण उसकी कक्षाओं में हो रहा है।' उमाशंकर जोशी के इस कथन को कोठारी शिक्षा आयोग ने अपनी शिक्षा नीति में महत्वपूर्ण माना है। शिक्षा के एक आंतरिक अंग के रूप में सामाजिक, नैतिक और आध्यात्मिक मूल्यों की शिक्षा पर चारों साहित्यकारों ने मुख्य जोर दिया है।

उमाशंकर जोशी और सुरेश जोशी का मानना है कि शिक्षा नीति की रूपरेखा इतिहास के आधार पर तैयार करने के बजाय भविष्य की चुनौतियों और जरूरतों को ध्यान में रखकर तैयार की जानी चाहिए। काकासाहब और किशोरलाल मशरूवाला राष्ट्रीय शिक्षा के बजाय शुद्ध शिक्षा पर जोर देते हैं। उनका मानना है कि अगर समाज को शुद्ध शिक्षा दी जाएगी, तो उनमें राष्ट्रीय भावना स्वतः ही जागृत हो जाएगी।

किशोरलाल कहते हैं कि सच्ची जानकारी तभी प्राप्त होती है जब मन शुद्ध हो। यह सच्ची जानकारी किसी व्यक्ति के व्यवहार को देखकर उसकी कठिन परिस्थितियों में पुष्ट होती है या नहीं, यह उसी से ज्ञात होता है। काकासाहब ने ज्ञान प्राप्त करने के लिए साधन-शुद्धि पर विशेष जोर दिया है। यदि ज्ञान प्राप्त करने का साधन ही दूषित हो तो वह ज्ञान लंबे समय तक अपने मूल स्वरूप में नहीं रह सकता।

"शिक्षा का अर्थ है कि जिस समय जिस ज्ञान की आवश्यकता हो, उस समय वह ज्ञान कहीं से भी स्वयं खोज लेने की शक्ति होनी चाहिए।"(जीवनविकास पृष्ठ संख्या 33) इस परिभाषा को पढ़कर ऐसा लगता है कि काकासाहब ने साधन-शुद्धि पर विचार नहीं किया, लेकिन वे शिक्षा में साधन-शुद्धि का बार-बार उल्लेख करते हैं। उनका कहना है कि जब बुद्धि निर्मल हो जाती है तभी सच्चा ज्ञान प्राप्त होता है। किशोरलाल मशरूवाला भी यही कहते हैं कि जब मन शुद्ध हो जाए तभी सच्ची शिक्षा प्राप्त की जा सकती है। लेकिन अधिकांश लोगों का मन शुद्ध नहीं होता, इसलिए वे शिक्षा से वंचित रह जाते हैं।

काकासाहब और उमाशंकर जोशी गांधीजी के अनुयायी होने के कारण गांधीजी के बुनियादी शिक्षा के विचारों को समान रूप से प्रस्तुत करते हैं। वे अक्षर ज्ञान के साथ शारीरिक

ISSN PRINT 2319 1775 Online 2320 7876
Research Paper © 2012 IJFANS. All Rights Reserved Journal UGC CARE Listed (Group-I) Volume 11, Iss 01 Jan 2022

शिक्षा पर भी जोर देते हैं, जो उद्योग-प्रधान और स्वावलंबी होनी चाहिए। किशोरलाल, उमाशंकर और काकासाहब अक्षर ज्ञान की तुलना में चरित्र निर्माण को शिक्षा में महत्वपूर्ण स्थान देते हैं।

उमाशंकर जोशी शिक्षा का मुख्य उद्देश्य व्यक्ति को आदर्श बनाना मानते हैं, जबकि किशोरलाल व्यक्ति को विनम्र और विवेकशील बनाने पर जोर देते हैं। काकासाहब कालेलकर व्यक्ति के चरित्र और सेवा भावना को महत्वपूर्ण मानते हैं। सुरेश जोशी व्यक्ति की स्वतंत्रता और समझदारी को आवश्यक मानते हैं।

काकासाहब कहते हैं कि मनुष्य अज्ञानी और जड़ है, वह अनेक कुवासनाओं से घिरा हुआ है; उसकी आत्मा की आवाज दब गई है। उसे अपना विकास करने का रास्ता नहीं मिलता। यदि इन सब से उसे मुक्त करना है, तो उसमें आत्मज्ञान जगाना चाहिए। इस आत्मज्ञान को जगाने के लिए उसे सच्ची शिक्षा मिलनी चाहिए। उनका मानना है कि जब तक व्यक्ति में आत्मज्ञान जागृत नहीं होता, तब तक उसका अर्जित ज्ञान व्यर्थ है। किशोरलाल मशरूवाला भी कहते हैं कि ज्ञानी पुरुष में जो समदृष्टि और विवेकबुद्धि होती है, वह आत्मज्ञान से प्राप्त होती है। यह आत्मज्ञान 'मेरा-तेरा' के भेद को नष्ट कर 'हमारापन' की भावना विकसित करता है। संपूर्ण सृष्टि में निर्दोष आत्मा व्याप्त है। यदि व्यक्ति आत्मज्ञानी हो जाता है, तो उसका व्यवहार शुद्ध हो जाता है और वह पूरी सृष्टि का कल्याण करने वाला बन जाता है। यहाँ आत्मज्ञान का अर्थ मन की शुद्धि और निर्मल बुद्धि के रूप में व्यापक किया गया है।

अन्य शिक्षाविदों से अलग, काकासाहब ने यौन शिक्षा पर भी जोर दिया है। उन्होंने यौन समस्याओं के लिए 'काममीमांसा' शब्द का प्रयोग किया है। उनका कहना है कि किशोरावस्था के दौरान विद्यार्थी कोई अनैतिक कार्य न करे, और यदि बुरी संगति और नासमझी के कारण कर भी बैठे, तो उसे सही रास्ते पर लाने की जिम्मेदारी परिवार, शिक्षक और गृहपति की होती है। काममीमांसा की शिक्षा सख्त आदेशों या अत्यधिक उदारता से देने पर उसके दुष्प्रभाव होने की संभावना रहती है। इसलिए काममीमांसा की शिक्षा विवेकबुद्धि और सावधानी से देनी चाहिए।

किशोरलाल मशरूवाला एक निडर समीक्षक, विचारक और दार्शनिक थे, इसलिए उन्होंने शिक्षा और धर्म के बारे में बहुत गहराई से और दिलचस्प चर्चा की है। उन्होंने शिक्षा में विनम्रता और विवेकबुद्धि को बहुत महत्वपूर्ण माना और इसे जीवन में उतारने की मार्मिक अपील की है। उन्होंने कल्पना शक्ति, तर्क शक्ति, बुद्धि और प्रज्ञा के बीच के भेद और समानता पर गहराई से चर्चा की है। उमाशंकर जोशी की तरह, किशोरलाल मशरूवाला के लिए विज्ञान का समझदारी भरा उपयोग कई लाभ देता है, लेकिन अगर उसमें से मानवीय दृष्टिकोण गायब हो

ISSN PRINT 2319 1775 Online 2320 7876
Research Paper © 2012 IJFANS. All Rights Reserved Journal UGC CARE Listed (Group-I) Volume 11, Iss 01 Jan 2022

जाए, स्वार्थ आ जाए और उसका विवेकहीन उपयोग हो, तो वह विनाश की ओर ले जाता है। उमाशंकर जोशी, किशोरलाल मशरूवाला और सुरेश जोशी कहते हैं कि आज के यांत्रिक युग में मनुष्य भी यंत्र की तरह जड़ हो गया है, उसमें से मानवता मर चुकी है।

किशोरलाल मशरूवाला कहते हैं कि मनुष्य के कर्तव्य के पीछे की निष्ठा अत्यंत आवश्यक है। कोई भी कार्य जबरदस्ती या बलपूर्वक नहीं कराया जाना चाहिए। काकासाहब भी कहते हैं कि कला के लिए कला हो सकती है, लेकिन कार्य के लिए कार्य करना व्यर्थ है। काकासाहब और किशोरलाल वैराग्य के संकीर्ण अर्थ से बाहर जाकर उसका विशाल अर्थ देते हैं। वैराग्य का अर्थ है संसार के सुख-दुःख से परे होकर प्रत्येक जीव के प्रति समभाव अनुभव करना और उसका कल्याण करने के लिए तत्पर रहना।

किशोरलाल मशरूवाला ने गीता का गहरा अध्ययन किया था, इसलिए उन्होंने शिक्षा में कर्म को प्रधान माना है। वे कहते हैं कि कर्म का सिद्धांत ही मनुष्य को तारता और मारता है। यहाँ 'तारता' और 'मारता' शब्द का गहरा अर्थ समझना जरूरी है। मनुष्य को अपने कर्म किसी एक व्यक्ति को लक्षित करके नहीं, बल्कि समदृष्टि और योगबुद्धि से करने चाहिए। हर व्यक्ति में तेल रूपी अज्ञान की परत जमी होती है। उसे सच्चे कर्म के सिद्धांत से जोड़ने के लिए अज्ञान की इस परत को हटाना जरूरी है। उमाशंकर जोशी भी कहते हैं कि जब से मनुष्य 'हमारा-अपना' से 'मैं और मेरा' पर आया, तब से उसने शुद्ध कर्म का सिद्धांत खो दिया है।

उमाशंकर जोशी कहते हैं कि शिक्षा के लिए मूल शब्द 'विनय' था, लेकिन आज हमने शिक्षा से विनय को नकार दिया है। किशोरलाल मशरूवाला ने भी विद्या या ज्ञान के लिए 'विनय' शब्द का प्रयोग किया है।

"जीवन में ऊब और शुष्कता से मृत्यु आना भूखमरी से आने वाली मृत्यु से कुछ बेहतर नहीं है।"(शिवसंकल्प पृष्ठ संख्या 117) शिक्षा का काम मनुष्य को विकसित करना है। उसे ज्ञान का भंडार देकर व्यक्ति के जीवन को नीरस और उदास बनाना नहीं है। यदि किसी व्यक्ति के पास सब कुछ हो, फिर भी वह जीवन की नीरसता और शुष्कता के कारण आत्महत्या करे या ऊबकर मृत्यु को खोजे, तो यह समाज के लिए एक कलंक है। आज की शिक्षा भी जीवन को आनंदमय और मधुर बनाने के बजाय बोझिल और चेतनाहीन बनाती है। उमाशंकर जोशी की इस बात का सुरेश जोशी भी समर्थन करते हैं। वे कहते हैं कि विद्यार्थी प्रकृति के बीच रहते हुए भी पुष्प की गंध और हवा के स्पर्श से दूर रहता है। हल्की बारिश के बीच भी वह सूखा रह सकता है। समाज के बीच रहते हुए भी वह अपने हृदय को शुष्क रख सकता है। उसे मनतरंगों की

Research Paper © 2012 IJFANS. All Rights Reserved

दुनिया में जीना पसंद है। उसे अपने जीवन के कई अनमोल साल शिक्षा के पीछे बर्बाद करने का अफसोस नहीं होता।

सुरेश जोशी और उमाशंकर जोशी दोनों कहते हैं कि आज हम ढेर सारे विश्वविद्यालय खोलकर थोक के भाव से विद्यार्थियों को प्रवेश देकर शिक्षा के नाम पर एक बड़ा पाप कर रहे हैं। विश्वविद्यालयों में शिक्षा के नाम पर भयानक बुराई घुस गई है। आज कॉलेज रोजगार की नहीं, बल्कि बेरोजगारी की गारंटी और उपाधि देते हैं। यदि हम में थोड़ी भी मानवता बची है, तो आज की शिक्षा प्रणाली और शिक्षा संस्थानों में आमूल-चूल परिवर्तन करना चाहिए।

सुरेश जोशी कहते हैं कि हमारे यहाँ बुद्धिमानों की ज्यादा इज्जत नहीं है। ये तथाकथित बुद्धिमान लोग शिक्षा के धाम में राजनीति के दांव-पेंच घुसाते हैं और हवा देखकर अपना पाला बदल लेते हैं। शुद्ध बुद्धिमानों को नीचा दिखाने के दांव-पेंच समाज में चलते रहते हैं। समाज और सत्ताधारी नहीं चाहते कि शिक्षा संस्थानों की बागडोर शुद्ध शिक्षाविदों के हाथ में आए। यदि ऐसा होता है, तो उनके हित खतरे में पड़ जाते हैं और उनकी गलत मंशा विफल हो जाती है। किशोरलाल मशरूवाला ने भी केवल पांडित्य का विरोध किया है। यह पांडित्य बुद्धि समाज और देश के विकास में काम नहीं आती, यह केवल उस व्यक्ति के अहंकार को ही पोषित करती है।

किशोरलाल मशरूवाला ने शिक्षा में शिष्टाचार के साथ-साथ बाहरी दिखावे और पहनावे पर भी विशेष जोर दिया है। व्यक्ति की पहचान सादगी, स्वच्छता और शिष्टता के आधार पर भी होनी चाहिए। व्यक्ति जिस समाज में रहता हो, उसका पहनावा उस समाज के लिए उपयोगी, सुविधाजनक और शिष्ट होना चाहिए। भाषा और भोजन भी उस समाज और स्थान के अनुकूल होना चाहिए जहाँ वह रहता है। शिक्षा का काम व्यक्ति के पूर्वाग्रहों को दूर करना है। जब तक व्यक्ति में कोई पूर्वाग्रह रहेगा, तब तक वह सत्य को स्वीकार नहीं कर पाएगा। यह पूर्वाग्रह आत्मा पर चढ़ा हुआ अज्ञान का आवरण है। जब तक यह आवरण नहीं हटेगा, तब तक शिक्षा व्यर्थ जाएगी।

उमाशंकर जोशी ने अध्ययन और अध्यापन के लिए विद्यार्थी और शिक्षक को शिक्षा के दो बिंदु के रूप में स्वीकार किया है। इन दो बिंदुओं के माध्यम से संपूर्ण शिक्षा की एक प्रक्रिया होती है और ज्ञान रूपी उपज मिलती है। अब देखें तो अधिकांश विद्यार्थी स्वयं ज्ञान प्राप्त करने के लिए उत्सुक नहीं होते हैं। इसलिए ज्ञान देने का पूरा भार शिक्षक के सिर पर आ जाता है। ऐसी स्थिति में, यदि शिक्षक पेशे से शिक्षक नहीं, बल्कि स्वभाव से शिक्षक हो, तो अध्ययन और अध्यापन की प्रक्रिया बेहतरीन तरीके से होती है।

Research Paper © 2012 IJFANS. All Rights Reserved

चारों साहित्यकार कहते हैं कि प्राथमिक शिक्षा सार्वभौमिक होनी चाहिए, इससे कोई भी वंचित नहीं रहना चाहिए। माध्यमिक शिक्षा किसी एक उद्योग या हस्तकला के कौशल को बढ़ाए और उसमें निपुण बनाए, ऐसी होनी चाहिए। उच्च शिक्षा सार्वभौमिक नहीं होनी चाहिए, बल्कि जो विद्यार्थी इच्छुक हो, उसे सहजता से प्राप्त होनी चाहिए। शिक्षा में ज्ञान, चरित्र और व्यवहार के निर्माण पर जोर देना चाहिए। पूरी शिक्षा को संकीर्ण अर्थ से बाहर आकर मूल्यनिष्ठ बनना जरूरी है। 'शिक्षा यानी मानव और समाज का निर्माण' जैसे राधाकृष्णन के विचार को सार्थक करने वाली होनी चाहिए। शिक्षा नव-निर्माण और नव-चेतना फैलाने वाली होनी चाहिए।

बच्चों पर थोपे जाने वाले अनुशासन का उमाशंकर जोशी, काकासाहब और किशोरलाल मशरूवाला विरोध करते हैं। वे इस बात पर जोर देते हैं कि शिक्षक द्वारा ऐसा वातावरण बनाया जाना चाहिए जिसमें बच्चों में स्वयं अनुशासन के संस्कार उत्पन्न हों। यदि केवल भय और दंड से ही अनुशासन आता, तो समाज में अपराधों का अनुपात घट जाता और पूरा समाज अनुशासित हो जाता। भय पैदा करके और दंड देकर अनुशासन का दिखावटी माहौल बनाने से दूर रहना चाहिए। बच्चा स्प्रिंग जैसा होता है, जब तक उस पर दंड का भय रहेगा, तब तक वह दबा हुआ और अंदर ही अंदर घुटा रहेगा, लेकिन जैसे ही भय दूर होगा, उसके अनेक दुर्गुण बाहर आ जाएंगे। जैसे ही वह भय के माहौल से दूर होगा, वह समाज के सामने विद्रोह करेगा।

बच्चे के जन्म के साथ ही बाल-पालन की पीड़ा और आनंद की प्रक्रिया शुरू हो जाती है। यदि माता-पिता जागरूक और संस्कारी हों, तो बाल-पालन बहुत अच्छी तरह से हो जाता है। बहुत से माता-पिता बच्चे को तीन-चार साल की उम्र में सीधे बालमंदिरों में भेज देते हैं। तो कुछ माता-पिता बच्चों को 'किड्स गार्डन' के नाम पर संस्कार गढ़ने का अड्डा चला रहे शोषणखोरों को सौंप देते हैं। इसमें शिक्षा और संस्कारों के नाम पर बच्चों का निर्दोष आनंद छीन लिया जाता है। बच्चे के मन पर जबरदस्ती डाले गए संस्कारों की छाप बच्चा बड़ा होने पर भी नहीं भूल पाता। कई बार बच्चा मानसिक आघात में चला जाता है और जीवन भर उसका असर रहता है।

यदि बच्चे को बार-बार शारीरिक दंड दिया जाए, तो वह बिगड़ैल और कठोर बन जाता है। कक्षा में होशियार, कमजोर, सामान्य, अमीर, गरीब, संस्कारी, असभ्य आदि कई प्रकार के बच्चे होते हैं। सभी को एक ही छड़ी से हाँकना असंभव है। फिर, कक्षा में हर साल नए-नए बच्चे आते रहते हैं, इसलिए उन्हें दंड देकर सुधारा जा सकता है, इस जड़ मान्यता से बाहर आना चाहिए। यदि दंड से शिक्षा दी जा सकती होती, तो आज पूरा समाज शिक्षित होता। सुरेश जोशी कहते हैं कि आज 'सुधरे हुए' और 'गांधीवादी' जैसे कटाक्ष भरे शब्द भी गाली के रूप में

ISSN PRINT 2319 1775 Online 2320 7876
Research Paper © 2012 IJFANS. All Rights Reserved Journal UGC CARE Listed (Group-I) Volume 11, Iss 01 Jan 2022

प्रयोग किए जाते हैं। समाज इस जड़ मान्यता से बाहर आकर सच्ची शिक्षा प्राप्त करे, यही वांछनीय है। कक्षा में उत्तम तरीके से अध्यापन कार्य करने के लिए 'सिद्धि-प्रेरणा' की विशेष आवश्यकता है। सिद्धि-प्रेरणा के माध्यम से विद्यार्थियों में निहित सत्व को जगाकर, पहचानकर उसे प्रोत्साहित करना चाहिए। विद्यार्थी को सिखाने की गलत धारणा से बाहर आकर, उसे सीखने के लिए स्वयं जागरूक हो ऐसा मार्गदर्शन देने के लिए तैयार रहना चाहिए।

किशोरलाल मशरूवाला कहते हैं कि ज्ञान प्राप्त करने के लिए जानकारी को प्रत्यक्ष करने की जिज्ञासा और आदत होनी चाहिए। प्रत्यक्ष करने की जिज्ञासा या आदत संस्कार का विषय है। ऐसे संस्कार देना शिक्षा का महत्वपूर्ण अंग है। शिक्षक, माता-पिता या मित्र से विद्यार्थी परोक्ष ज्ञान प्राप्त कर सकता है, लेकिन प्रत्यक्ष ज्ञान तो विद्यार्थी को खुद ही प्राप्त करना पड़ता है। प्रत्यक्ष ज्ञान ही जीवन में उपयोगी होता है। कम पढ़े-लिखे गरीब माता-पिता या शिक्षक भी कम से कम साहित्य से विद्यार्थी को प्रत्यक्ष ज्ञान देकर शिक्षित और शक्तिशाली बना सकते हैं। जिस विद्यार्थी में प्रत्यक्ष ज्ञान प्राप्त करने की लगन होती है, ऐसे मेहनती विद्यार्थी के हृदय में ज्ञान का वृक्ष अपने आप खिल उठता है।

काकासाहब कालेलकर कहते हैं कि भोग और ऐश्वर्य जैसे इंद्रिय सुख ही जीवन का ध्येय है, यह मान्यता गलत है। ऐसे जड़ लोगों को शिक्षा का उद्देश्य समझाना मुश्किल है। हर किसी का जीवन भागदौड़ भरा और अनेक मुश्किलों से घिरा होता है। घर में एक तरह की दुनिया, किताबों में दूसरी, शिक्षा संस्थानों में तीसरी, समाज में चौथी और अपने मन-राज्य में पाँचवीं दुनिया देखने को मिलती है। इसलिए विद्यार्थी के लिए यह समझना मुश्किल हो जाता है कि कौन सी दुनिया सच्ची है। जैसे विद्यार्थी कई प्रवृत्तियों वाले होते हैं, वैसे ही शिक्षकों और माता-पिता में भी कई प्रवृत्तियाँ देखने को मिलती हैं। कुछ शिक्षक पिता जैसी प्रवृत्ति के, कुछ शिक्षक माँ की तरह, कुछ जेलर जैसे, कुछ बड़े भाई जैसे, कुछ दुकानदार जैसे, तो कुछ मार्गदर्शक और मित्र जैसे होते हैं। शिक्षक को विद्यार्थी का समकालीन बनकर उसकी अंतरात्मा में गहराई तक उतरकर प्यार और स्नेह से शिक्षा की ज्योति जगानी चाहिए।

उमाशंकर जोशी कहते हैं कि जब हमारे पास साधन कम थे, तब हमने विद्या के क्षेत्र में गहरी उपलब्धि हासिल की थी। आज विद्या प्राप्ति के अनेक साधन और सुलभता होने के बावजूद हम शिक्षा का सही निष्कर्ष निकालने में विफल रहे हैं। पहले एक विषय में पारंगतता प्राप्त करने के बाद दूसरे विषय की शिक्षा शुरू होती थी। उस समय किताबों के अभाव में मौखिक ज्ञान से भी विद्यार्थी उच्च उपलब्धि प्राप्त करता था। आज अनेक पुस्तकालय होने के बावजूद विद्यार्थी शिक्षा से वंचित रहते हैं। वे कहते हैं कि बढ़ती समृद्धि वाले पुस्तकालयों

Research Paper © 2012 IJFANS. All Rights Reserved

का उपयोग आज नगण्य है। किताबों की संख्या कई गुना बढ़ गई है, लेकिन पाठक वर्ग की गुणवत्ता घट रही है। आज पढ़ी जाने वाली किताबों में ज्यादातर अश्लील, हल्के मनोरंजन वाली, रहस्य-कथाओं, क्राइम-कथाओं और उपन्यासों का अनुपात कई गुना बढ़ गया है। लेकिन सच्ची संस्कृति और संस्कारों का निर्माण करने वाली किताबों का वाचन नगण्य है। कुछ अच्छी पत्रिकाएँ मरने के कगार पर हैं, उन्हें पाठक नहीं मिलते। जबकि अश्लील और हल्का मनोरंजन परोसने वाली पत्रिकाओं की मांग दिन-प्रतिदिन लगातार बढ़ रही है, जो समाज के लिए एक खतरे की घंटी है। आज शिक्षक और विद्यार्थी साल भर में कितनी गुणवत्ता वाली किताबें पढ़ते हैं, यह कहना मुश्किल है। कई शिक्षक और विद्यार्थी तो पाठ्यपुस्तकें भी पूरी पढ़ते हों, ऐसा नहीं लगता।

सुरेश जोशी कहते हैं कि यदि हम चाहते हैं कि आज की शिक्षा उपयोगी साबित हो, तो ऐसी संस्कृति का निर्माण हो, तो उसमें विद्रोहात्मक सभ्यता उत्पन्न होगी ही। इस विद्रोहात्मक सभ्यता को सकारात्मक रास्ते पर मोड़कर समाज और देश के लिए उपयोगी बनाने की जिम्मेदारी अध्यापक की है। यह अध्यापक व्यावहारिक नहीं, पूर्ण शिक्षाविद् होना चाहिए। पूंजीवादी समाज व्यवस्था में जो श्रम-व्यवस्था है, उसे तोड़ना चाहिए और उसे बनाए रखने वाले शिक्षा संस्थानों को खत्म करना चाहिए। आज का समाज भी समस्याओं को स्पष्ट रूप देना नहीं चाहता, उनका समाधान भी नहीं चाहता। इन समस्याओं पर पलने वाला भी एक जड़ वर्ग है जो शिक्षा में सुधारों को सफल नहीं होने देता। ये लोग इन समस्याओं से ही अपना स्वार्थ सिद्ध करते हैं।

जो शिक्षा का उद्देश्य केवल मानसिक विकास का है, हृदय के विकास का नहीं, श्रम से दूर भगाने वाला है, वह सच्ची शिक्षा नहीं है। शिक्षा की सच्ची पद्धतियों में से कुछ पद्धतियाँ इस प्रकार हैं: प्रकृति को प्राथमिकता दें, क्रिया द्वारा शिक्षा दें, शिक्षा के साथ जीवन का वास्तविक अनुभव जोड़ें, खेल-कूद को प्रधानता दें, शिक्षा में रचनात्मक गतिविधियों को शामिल करें। शिक्षा में उपदेश को आंशिक रखकर सकारात्मक विचारों को प्रोत्साहन देना चाहिए।

आज शिक्षा और शिक्षा पद्धति में अनेक सुधार आए हैं, लेकिन शिक्षा का सार लोगों के हृदय तक नहीं पहुँचा है। नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 में शिक्षा में बड़े बदलाव किए गए हैं। यह शिक्षा लोगों के हृदय तक पहुँचे और मनुष्य को फिर से मानवता का गौरव दिलाए, यही प्रभु से प्रार्थना है।

❖ संदर्भ ग्रंथ सूची:

1. समूळी क्रांति - किशोरलाल मशरूवाला (संस्करण-2007)

ISSN PRINT 2319 1775 Online 2320 7876
Research Paper © 2012 IJFANS. All Rights Reserved Journal UGC CARE Listed (Group-I) Volume 11, Iss 01 Jan 2022

2. केळवणीना पाया - किशोरलाल मशरूवाला (संस्करण-संवत 1982)
3. शिवसंकल्प - उमाशंकर जोशी (संस्करण-2011)
4. केळवणीनो कीमियो - उमाशंकर जोशी (संस्करण-2011)
5. जीवनविकास - काका कालेलकर (संस्करण-1936)
6. रखडवानो आनंद - काका कालेलकर (संस्करण-2021)
7. जगतरंग - उमाशंकर जोशी (संस्करण-2012)
8. कालेलकरना लेखो-1 - काका कालेलकर (संस्करण-संवत 1980)
9. जीवनशोधन - किशोरलाल मशरूवाला (संस्करण-1992)
10. गीतामंथन - किशोरलाल मशरूवाला (संस्करण-2012)
11. सुरेश जोशीनुं साहित्यविश्व:2 - निबंध-2 सं. शिरीष पंचाल (संस्करण-2018)